**हक अरस परस सरस सब एक रस, वाहेदत खिलवत निसबत न्यामत।**
**महामत अलमस्त होए आवें उमत लिए, पीवत आवत हक हाथ सरबत।। ४ ।।**

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी और मेरे अरस-परस (परस्पर) मिलने से दोनों एक रस हो गए और मूल-मिलावे की एकदिली की निसबत और न्यामत की पहचान हुई। अब श्री राजजी महाराज अपने हाथों से इश्क का शर्बत पिलाकर मोमिनों की जमात को लेकर मस्ती से घर आ रहे हैं।

॥ प्रकरण ॥ ११७ ॥ चौपाई ॥ १७०० ॥

## राग श्री

**मोमिन लिखे मोमिन को, कहो तो आवें इत।**
**ए अचरज देखो मोमिनों, कैसा समया हुआ सखत।। १ ।।**

राजाराम भाई मेड़ते से छत्रसालजी को लिख रहे हैं कि हमारी सेवा का भार जब आपने ले ही लिया है, तो यदि कहो तो हम भी वहां आ जाएं। श्री महामतिजी कहते हैं कि बड़ी हैरानी की बात है। मोमिनो! देखो, समय कितना कठिन हो गया।

**दम दिल तन एकै, बिछुर के भूली वतन।**
**जानू के सोहोबत कबूं न हुती, तो यों कहावें सुकन।। २ ।।**

जिनका एक तन, एक दिल, एक घर है, वह बिछुड़कर माया में ऐसी भूल गई हैं कि मानो कभी मिली ही नहीं थी, इसलिए ऐसा लिखा है।

**मोमिन रखे मोमिन सों, जो तन मन अपना माल।**
**सो अरवा नहीं अर्स की, न तिन सिर नूर जमाल।। ३ ।।**

जो ब्रह्मसृष्टि (सुन्दरसाथ) दूसरे सुन्दरसाथ से अपना तन, मन और धन अलग समझता है, वह परमधाम की आत्मा नहीं है और उन पर श्री राजजी महाराज की मेहर नहीं है।

**मता मोमिन का काफर, ले न सके क्योंए कर।**
**दिल मोमिन का अर्स कह्या, दिल काफर अबलीस घर।। ४ ।।**

मोमिनों का खजाना (न्यामत-तारतम वाणी) काफिर किसी तरह नहीं ले सकते। मोमिनों के दिल में श्री राजजी महाराज की बैठक है। काफिर के दिल में शैतान की बैठक है।

**जब मेला होसी मोमिनों, तब देखसी सब कोए।**
**और न कोई कर सके, जो मोमिनों से होए।। ५ ।।**

जब मोमिनों का मेला होगा तब इस बात को सब जान जाएंगे, जो काम मोमिन कर सकते हैं उसे और कोई नहीं कर सकता।

**जब लग भूली वतन, तब लग नाहीं दोस।**
**जब जागी हक इलमें, तब भूली सिर अफसोस।। ६ ।।**

ब्रह्मसृष्टि जब तक घर को भूली है और अनजानेपन में कोई गलती हो जाती है तो कोई दोष नहीं है। पर धनी की जागृत बुद्धि से जब वह जागृत हो जाती है, तब वह अपनी गलती पर अफसोस करेगी।

Nijanand App

**हकें जगाए मोमिन, अपनी जान निसबत।**
**अर्स किया दिल मोमिन, बैठाए बीच खिलवत।।७ ।।**

श्री राजजी महाराज ने मोमिनों को अपना निसबती जानकर जागृत किया और मोमिनों का दिल अपना अर्श बनाकर एकान्त में अपने चरणों तले बैठाया।

**जाकी तरफ न पाई किनहूं, इन माहें चौदे तबक।**
**ताको ले बैठे दिल में, किया ऐसा अपने हक।।८ ।।**

चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में किसी ने परमधाम को नहीं जाना था। उस परमधाम के सुखों को लेकर श्री राजजी महाराज हमारे दिल में आ बैठे। ऐसी मेहर श्री राजजी महाराज ने हमारे ऊपर की।

**और दुनी के दिल पर, किया अबलीस पातसाह।**
**सो गुम हुए बीच रात के, क्यों ए न पावें राह।।९ ।।**

दुनियां के दिलों पर शैतान अबलीस की बादशाही कर दी, इसलिए यह अज्ञानता के अन्धकार में भटक गए और इनको रास्ता नहीं मिला।

**ऐसा हकें जाहेर किया, ऊपर रूहों मेहेर मुतलक।**
**कई बिध बताई रसूलें, पर क्या करे हवाई खलक।।१० ।।**

श्री राजजी महाराज ने स्पष्ट कहा है कि उनकी रूहों पर असीम कृपा है। इस बात को रसूल साहब ने कई तरह से बताया, पर यह निराकार की जीवसृष्टि कैसे समझे?

**मोमिन सुकन सुन जागसी, जाको अर्स वतन।**
**जब नूर झंडा खड़ा हुआ, पीछे रहें न रूहें अर्स तन।।११ ।।**

जिन मोमिनों का घर परमधाम है वह इन वचनों को सुनकर जाग जाएंगे। जब तारतम का नूरी झंडा खड़ा हुआ तो कोई ब्रह्मसृष्टि पीछे नहीं रह जाएगी।

**एह किताबत पढ़ के, रूहें रेहे न सके एक खिन।**
**झूठी सों लग न रहे, जो रूह होए मोमिन।।१२ ।।**

इस वाणी को पढ़कर आत्मा (ब्रह्मसृष्टि) एक पल भी न रह सकेगी। जिनकी रूह अर्श की होगी वह झूठी माया में लग नहीं सकती।

**सखत बखत ऐसा हुआ, ईमान छोड़्या सबन।**
**तब अरवाहें करें कुरबानियां, मह होवें मोमिन।।१३ ।।**

इस माया के ब्रह्माण्ड में ऐसा कठिन समय आ गया कि सब ईमान छोड़ देंगे। तब ब्रह्मसृष्टि अपनी कुर्बानी देगी और दूसरे मोमिन इस रास्ते पर चलेंगे।

**जीव देते ना सकुचें, मोमिन राह हक पर।**
**दुनियां जीव ना दे सके, अर्स रूहों बिगर।।१४ ।।**

मोमिन श्री राजजी महाराज की राह में अपने प्राण देने में भी संकोच नहीं करते। अर्श की रूहों के अलावा दुनियां के जीव प्राण न्योछावर नहीं कर सकते।

Nijanand App

**अर्स तन रूह मोमिन, लोभ न झूठा ताए।**
**मोमिन जुदागी न सहें, ज्यों दूध मिसरी मिल जाए।। १५ ।।**

मोमिनों के तन में श्री राजजी अर्श करके बैठे हैं, इसलिए इनको झूठी माया का लोभ नहीं सताएगा। मोमिन श्री राजजी महाराज की जुदाई नहीं सहन करेंगे। जैसे दूध और मिश्री मिलकर एक रस हो जाते हैं उसी तरह यह भी एक तन हो जाएंगे।

**लिखी फकीरी ताले मिने, अपने हादी के।**
**कदम पर कदम धरें, मोमिन कहिए ए।। १६ ।।**

हमारे हादी श्री प्राणनाथजी के नसीब में फकीरी लिखी है। जो अपने हादी के कदमों पर कदम रखकर (नक्शे कदम पर चलेंगे) चलेंगे, उन्हीं को परमधाम की ब्रह्मसृष्टि कहा जा सकता है।

**एक हक बिना कछू न रखें, दुनी करी मुरदार।**
**अर्स किया दिल मोमिन, पोहोंचे नूर के पार।। १७ ।।**

मोमिन श्री राजजी महाराज के सिवाय सारी दुनियां को मुरदार समझ कर छोड़ देंगे। इनके दिल में श्री राजजी बैठे हैं और यह अक्षर के पार अक्षरातीत धाम पहुंचेंगे।

**महामत कहें ए मोमिनों, ए है अपनी गत।**
**झूठ वास्ते जुदे ना पड़ें, मोमिन अर्स वाहेदत।। १८ ।।**

श्री महामतिजी कहते हैं कि हे मोमिनो! अपनी यही चाल है। हम घर में एक-दिल है, इसलिए झूठी माया में अलग नहीं होंगे।

**इन महंमद के दीन में, जो ल्यावेगा ईमान।**
**छत्रसाल तिन ऊपर, तन मन धन कुरबान।। १९ ।।**

श्री छत्रसालजी कहते हैं कि इन मुहम्मद (श्री प्राणनाथजी) के धर्म में जो ईमान लाएगा, उनके ऊपर मैं तन, मन, धन से कुर्बान हो जाऊंगा।

।। प्रकरण ।। ११८ ।। चौपाई ।। १७१९ ।।

## राग श्री परज

**वारी रे वारी मेरे प्यारे, वारी रे वारी।**
**टूक टूक कर डारों या तन, ऊपर कुंज बिहारी।। १ ।।**

हे मेरे प्यारे धनी! मैं तुझ पर वारी-वारी जाती हूं। मैं अपने तन के टुकड़े-टुकड़े करके कुंज-निकुंज में विहार करने वाले धाम धनी पर न्यौछावर कर दूं।

**सुन्दर सरूप स्याम स्यामाजी को, फेर फेर जाऊं बलिहारी।**
**इन दोऊ सरूपों दया करी, मुझ पर नजर तुमारी।। २ ।।**

इन दोनों स्वरूपों ने दया करके मुझ पर नजरे-करम किया है। ऐसे श्री राजजी श्री श्यामाजी के सुन्दर स्वरूपों पर मैं वारी-वारी जाती हूं।

**इन जेहेर जिमी से कोई ना निकस्या, अमल चढ़यो अति भारी।**
**मुझ देखते सैयल मेरी, कैयों जीत के बाजी हारी।। ३ ।।**

इस जहर भरे संसार से कोई भी पार नहीं जा सका। माया का नशा बहुत जोर का चढ़ा है। हे मेरी बहन! मेरे देखते-देखते कईयों ने अपना मनुष्य तन खो दिया।

Nijanand App